

जिनपे किया भरोसा-वही दर्द ही निकला
वादे-बहुत किये,मगर-हम दर्द न निकला

जिनपे किया-----

की रोज खता तू ने
मैंने मुआफ भी किया
की रोज दवा मैंने

मगर दर्द न निकला वादे बहुत---
जिन पे-----

थीं कभी बेताब-नजरें
दीदार के लिए

जब आजमाया-प्यार को

क्यों जर्द न निकला वादे बहुत---
जिन पे-----

तुझे साधना समझ कर
साधक मैं बन गया

झाँका ज़िगर में,तेरे तो

मेरा अक़्श न निकला वादे बहुत---
जिन पे-----

इस तरह-हर-दर्द पीकर

जी रहे "श्री बाबा श्री"

इस बे-रहम-दुनियाँ में,

मेरा-दर्द न-निकला वादे बहुत---
जिन पे-----